Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-05, October-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i5.41

प्रियप्रवास में सामाजिकता एवं संस्कृति का चित्रण

डॉ. रत्नाकर यादव

पूर्व अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

e-mail- yadavratnakar27290@gmail.com

Received: 07 Sepetember 2026 | **Accepted:** 14 Sepetember 2026 | **Published:** 25 October 2026

सारांश

'प्रियप्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है, जो 17 सर्गों में विभक्त है, जो 'हरिऔध' की अद्भुत प्रतिभा एवं गहन अनुभूति का द्योतक है। प्रियप्रवास में श्रीकृष्ण ब्रज के रक्षक नेता के रूप में अंकित किये गये हैं। इस ग्रंथ का विषय श्रीकृष्ण की मथुरा यात्रा है, इसी कारण इसका नाम 'प्रियप्रवास' है। श्रीकृष्ण एक महापुरुष की भांति अंकित हैं, ब्रह्म के रूप में नहीं एवं राधा लोकसेविका के रूप में अंकित हैं, जो कि समाज सेवा करना अपना कर्तव्य समझती हैं। प्रियप्रवास में सामाजिकता एवं संस्कृति का चित्रण के संदर्भ में देखा जा सकता है। जिसमें प्रियप्रवास की सामाजिकता, संस्कृति चित्रण, लोक संस्कृति का चित्रण, गो–चारण संस्कृति का चित्रण एवं प्रकृति की मनोरम झाँकी को समावेशित किया गया है। प्रियप्रवास में कवि ने लोक–शिक्षा के रूप में भी प्रकृति का चित्रण किया है। कवि ने श्रीकृष्ण के जीवन के माध्यम से समसामयिक राजनीति और सामाजिक समस्याओं का दर्शन कराया गया है।

मुख्य शब्द : हरिऔध, प्रियप्रवास, सामाजिकता, संस्कृति, लोकसंस्कृति, प्रकृति, गो–चारण संस्कृति।

प्रियप्रवास खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है, जो 17 सर्गों में विभक्त है, जो हरिऔध की अद्भुत प्रतिभा एवं गहन अनुभूति का द्योतक है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सारा काव्य संस्कृत के वर्णवृत्तों में लिखा गया है तथा इसका निर्माण खड़ी बोली के महाकाव्य सम्बन्धी अभाव की पूर्ति के लिए हुआ है, क्योंकि उस समय तक खड़ी बोली में फुटकर कविताएँ तो पर्याप्त मात्रा में लिखी जाती थी। कुछ कवि संस्कृत के छंदों में भी रचनाएँ किया करते थे, किन्तु किसी भी कवि ने खड़ी

बोली में महाकाव्य लिखने का प्रयास नहीं किया था। हरिऔध ने सबसे पहले इस दिशा की ओर कदम उठाया और इस कारण यह काव्य हिन्दी के गौरव ग्रंथों की श्रृंखला में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हुए हैं। प्रियप्रवास की भूमिका में हरिऔध ने खड़ी बोली लेखन को ही स्पष्ट रूप में स्वीकार किया है– ''अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि समय का प्रवाह खड़ी बोली के अनुकूल है, इस समय खड़ी बोली में कविता करने से अधिक उपकार की आशा है। अतएव मैंने भी प्रियप्रवास को खड़ी बोली में ही लिखा है, वास्तव में बात यह है कि यदि उसमें कांतता और मधुरता नहीं आई है, तो यह मेरी विद्या, बुद्धि और प्रतिभा का दोष है, खड़ी बोली का नहीं।''[1] अतएव आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हरिऔध एवं प्रियप्रवास की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि नवशिक्षितों के ससर्ग से उपाध्याय जी ने लोकसंग्रह का भाव अधिक ग्रहण किया है। प्रियप्रवास में श्रीकृष्ण ब्रज के रक्षक नेता के रूप में अंकित किये गये हैं। खड़ी बोली में इतना बड़ा काव्य अभी तक नहीं निकला है। बड़ी भारी विशेषता इस काव्य की यह है कि यह सारा संस्कृत के वर्णवृत्तों में है, जिसमें अधिक परिमाण में रचना करना कठिन काम है। उपाध्याय जी का संस्कृत पद विन्यास अनेक उपसर्गों से लदा तथा 'मुंज, मजुल, पेशल' आदि से बीच–बीच में जटित अर्थात् चुना होता है। यह काव्य अधिकतर भावव्यंजनात्मक और वर्णनात्मक है।''[2]

''प्रियप्रवास एक सशक्त विप्रलम्भ काव्य है, जिसकी रचना प्रेम और श्रृंगार के विभिन्न पक्षों को लेकर की गयी है। इस ग्रंथ का विषय श्रीकृष्ण की मथुरा यात्रा है, इसी कारण इसका नाम प्रियप्रवास है।''[3] कथा सूत्र से मथुरा यात्रा के अतिरिक्त उनकी ब्रज लीलाएँ भी अपने दिव्य रूप में समावेशित है। श्रीकृष्ण एक महापुरुष की भाँति अंकित है, ब्रह्म के रूप में नहीं एवं राधा लोकसेविका के रूप में अंकित है, जो कि समाज सेवा करना अपना कर्तव्य समझती है वह श्रीकृष्ण के लोकसेवा करने हेतु जाने के लिए प्रसन्न होती है, कहती है कि–

''प्यारे जीवे, जगहित करें, गृह चाहे न आवे।''[4]

राधा की बलिदान–भावना जागृत दिखाई देती है। राधा का आधुनिक लोकसेविका का रूप दृष्टव्य है–

'सलग्ना हो विविध कितने सांत्वना–कार्य में भी,
वे सेवा थी सतत् करती वृद्ध रोगी जनों की।
दीनों –हीनों निबल विधवा आदि को मानती थी,
पूजी जाती ब्रज–अवनि में देवियों सी अतः थी।'[5.]

राधा में प्रबुद्ध नारी की चेतना है। वे व्यक्तिगत स्वार्थों के ऊपर उठकर लोकसेविका का बाना धारण कर राष्ट्र के हित के लिए सम्पूर्ण सुखों की तिलांजलि दी है।

श्रीकृष्ण ईश्वर के अलौकिक गुणों से उत्पन्न न करके मानवीय गुणों से सम्पन्न है। इसमें श्रीकृष्ण के मानस्वरूप की अभिव्यक्ति मिलती है। हरिऔध के इस काव्य में श्रीकृष्ण के ब्रज से मथुरा–प्रवास की कथा का अंकन है। इसकी विशेषता यह है कि इसके लघु कथानक में श्रीकृष्ण के जीवन के माध्यम से समसामयिक, राजनीति और सामाजिक समस्याओं का परिदर्शन कराया गया है। साथ ही समाज के विविध अंगों और समस्याओं का समावेश कर मानव–मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं को मनोवैज्ञानिक चित्रण उपस्थित किया गया है, जिसमें तत्कालीन सामाजिक एवं संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट दिखता है। प्रियप्रवास के श्रीकृष्ण लोकनायक हैं, ब्रज के नेता है तथा ब्रज में उनकी श्रद्धाभरी उपासना भी होती है। श्रीकृष्ण शुद्ध मानवरूप में अवतीर्ण होकर विश्वमंगल से तत्पर हैं।

"थे राजपुत्र उनमें मद था न तो भी,
वे दीन के सदन थे अधिकांश जाते।
बातें–मनोरम सुना दुःख जानते थे,
औ थे विमोचन उसे करते कृपा से।।
रोगी दुःखी विपद–अपाद में पड़ों की,
सेवा सदैव करते निज–हस्त से थे।"[6]

कृष्ण से मधुतर पुरुष व्यक्तित्व की कल्पना संभवतः संसार के साहित्य में कहीं नही हुई। सभी कवियों की भाँति हरिऔध के कृष्ण भी परम सुन्दर, सुकुमार, कलाप्रिय, सरल–हृदय और गुणवान व्यक्ति हैं, वे महापुरुष हैं। क्या नंद, क्या यशोदा, क्या गोप, क्या आभीर और क्या गोपियाँ सब उन्हें उनके गुणों के कारण स्मरण करते हैं। इस महापुरुष का हृदय भी पीड़ित है। कृष्ण के हृदय में गोकुल की ममता है, माता–पिता की चिंता है, गोपियों की निर्मल स्मृति हे। सखाओं की प्रीति है और राधा के लिए अजस्त्र आसुओं का निर्झर है। ग्रामीण सामाजिक चेतना का हाव–भाव बड़े नैतिकता के साथ स्पष्ट प्रकट होता है। गो–चारण संस्कृति का दिव्य स्वरूप स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

'जब हुए समवेत शनैः शनैः
सकल गोप सधेनु समण्डली,
तब चले ब्रज–भूषण को लिये,
अति अलंकृत–गोकुल–ग्राम को,

गगन मण्डल में रज छा गई,

दश दिशा बहु–शब्दमयी हुई

विशद गोकुल के प्रति–गेह में।

बह चला वर–श्रोत विनोद का।'[7]

प्रियप्रवास में नन्द सभी के लिए अत्यन्त पूज्य एवं सम्मानीय है तथा श्रीकृष्ण जैसे पुत्र के कारण सम्पूर्ण ब्रजवासियों के लिए श्रद्धास्पद है। उनका हृदय वात्सल्य का अथाह सागर है, फिर भी पुत्र पर आने वाली विपत्तियों से वह सदैव उद्वेलित होता रहता है और कभी–कभी उनके मुँह से उन्हें निकलने लगती है, दोनों नेत्रों से निगम्न हो जाते हैं और उनकी रातें नहीं कटती। कंस के निमंत्रण पर उनकी यह दशा एक प्रिय पुत्र के व्यथित पिता की संजीव झाँकी प्रस्तुत करती है।

'सकल–गोकुल था यक तो दुःखी

प्रबल–वेग प्रभंजन आदि से,

अब दशा सुन नन्द–निकेत की

पवि–समाहत सा वह हो गया।'[8]

उसी तरह माता यशोदा का चरित्र भी अत्यन्त मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक है। यशोदा मातृत्व की विमल विभूति है। उानके हृदय में वात्सल्य की मधुर–धारा निरंतर बहती रहती है और अपने पुत्र की मंगल–कामना उनके जीवन का अभिन्न अंग बन जाती है, किन्तु श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर माता यशोदा की वही वात्सल्य रस की मधुर–धारा वियोग का सागर बन जाती है, जिसमें अथाह शोक अपार विषाद, असीम ममता एवं अनन्त करुणा भरी हुई है।

''जब विरह विधाता ने सृजा विश्व में था

तब स्मृति रचने में कौन–सी चातुरी थी।

यदि स्मृति विरचा तो क्यों उसे है बनाया

वपन–पटु कु–पीड़ा बीज प्राणी उरों में।''[9]

हरिऔध ने प्रियवास में प्रकृति की मनोरम झाँकी अंकित की है। यहाँ कवि प्रकृति–सुन्दरी की अनुपम छवि पर विमुग्ध होकर कभी उसे चेतन रूप में देखता है, कभी उनके रहस्यात्मक रूप पर आश्चर्य प्रकट करता है, कभी उसके संवेदनात्मक रूप की सराहना करता है और कभी उसके स्वतंत्र मनोहारी रूप की दिव्य छटा दिखती है। प्रियप्रवास में प्रकृति के आलम्बन रूप का चित्रण सबसे अधिक हुआ है। आलम्बन रूप में प्रकृति–चित्रण की दोनों प्रणालियाँ–बिम्ब ग्रहण प्रणाली तथा अर्थ–ग्रहण

प्रणाली का अद्भुत दृश्य समावेशित हैं। प्रियप्रवास में नवम् सर्ग के अन्तर्गत कवि ने गोवर्धन पर्वत की अलौकिक शोभा का वर्णन करते हुए उसे एक स्वाभिमानपूर्ण गिरिराज के रूप में अंकित किया है जो अपनी सर्वोच्चता के कारण ब्रज की शोभामयी भूमि का सुन्दर मानदंड बनकर ऊँचा सिर करके खड़ा दिखाई देता है–

'ऊँचा शीश सहर्ष शैल कर के था देखता व्योम को,
या होता अति ही–स–गर्व वह था सर्वोच्चता दर्प से,
या वार्ता यथ था प्रसिद्ध करता सामोदसंसार में,
मैं हूँ सुन्दर मान दण्ड ब्रज की शोभा–मयी–भूमि का।'[10]

श्रीकृष्ण–वियोग की चर्चा के कारण ब्रज में जो भयंकर रजनी छा जाती है, उसकी भीषण मूर्ति का संश्लिष्ट चित्त बड़ा ही भयावह है–

'प्रगटती बहु–भीषण मूर्ति थी।
कर रहा भय ताण्डव तृत्य था।
विकट–दन्त भयंकर–प्रेत भी
विचरते तरू–मूल–समीप थे।'[11]

प्रियप्रवास में कवि ने सामाजिक एवं संस्कृति वातावरण निर्माण के लिए भी प्रकृति का प्रयोग किया है। प्रायः आनन्द–उल्लास, हर्षोन्माद का वातावरण प्रस्तुत करने के लिए पूर्ण विकसित एवं उल्लसित प्रकृति की मनोरम झाँकी अंकति की जाती है और शोक विषाद, निर्जनता, एकान्त, खिन्नता, उदासीनता आदि का वातावरण प्रस्तुत करने के लिए गम्भीर, नीरव एवं शून्य प्रकृति का चित्र अंकित किया जाता है। कवि ने तृतीय सर्ग में विषाद, खिन्नता, शोक एवं उदासीनता का वातावरण बनाने के लिए प्रकृति के सुनसान निशीथ का भयावह चित्र अंकित किया है–

'समय था सुनसान निशीथ का
अटल भूतल में तम–राज्य था
प्रलय–काल समान प्रसुप्त हो
प्रकृति निश्चल, नीरव शान्त थी।''[12]

प्रियप्रवास में कवि ने लोक–शिक्षा के रूप में भी प्रकृति का चित्रण किया है। इस चित्रण के द्वारा कवि ने प्रकृति के विविध परिवर्तनों द्वारा जनसाधारण को शिक्षा एवं उपदेश दिये हैं। जैसे–आँवले का वृक्ष कच्चे फलों से लदकर तथा अपने चंचल पत्तों को हिलाता हुआ इस बात को सूचना दे रहा

था कि चंचल स्वभाव वाले उतावले व्यक्तियों की करतूते ऐसी ही स्थिरताविहीन होती है और उन्हें बहुधा अपनी चंचल करतूतों के कारण किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती है–

'' दिखा फलों की बहुधा अपक्वता
स्वपत्तियों की स्थिरता–विहीनता
बता रहा था चलचित्र वृत्ति के
उतावलों की करतूत आँवला।''[13]

वस्तुतः हम कह सकते हैं कि प्रियप्रवास में हरिऔध ने सामाजिक एवं संस्कृति का अद्‌भुत दिव्य रूप को रेखांकित किया है। गोचारण संस्कृति का स्वरूप भव्य एवं एकता, समानता, मानवता प्रेम, विश्वबंधुत्व, सेवा, परोपकार आदि का रूप स्पष्टतः उच्चकोटि का है। हरिऔध ने राधा एवं कृष्ण का ऐसा जीवन चित्र अंकित किया है, जिसमें वे प्राणिमात्र की हित सम्बर्द्धना से ओत–प्रोत होकर लोक सेवा, परोपकार, परदुःखकातरता, निर्बलों की रक्षा, दुराचारियों का सामना करने के लिए जन–जागरण में लीन दिखाए गये हैं। प्रियप्रवास में तत्कालीन राजनीतिक जीवन की झाँकी भी विद्यमान है। इसी कारण उसमें अहिंसा के स्थान पर उस हिंसा–कर्म को श्रेयस्कर बताया गया है, जो किसी प्राणी के उद्धार के लिए किया गया हो। जब कोई सबल अत्याचारी किसी निर्बल एवं अनाथ प्राणी को सताता है तब उसका वध कल्याणकारी होता है। इसप्रकार तत्कालीन युग के क्रांतिकारी विचारों और सामाजिक एवं संस्कृति की झलक 'प्रियप्रवास' में विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी–हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पुनर्मुद्रण, 2017, पृ0सं0–96
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण, पुनर्मुद्रण 2013, पृ0सं0 415
3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रियाप्रवास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, 2018, कवर पेज।
4. वही, पृ0सं0–60
5. वही, पृ0सं0– 255
6. वही, पृ0सं0– 178–179
7. वही, पृ0सं0– 50

8. वही, पृ0सं0– 61
9. वही, पृ0सं0– 223
10. वही, पृ0सं0– 125
11. वही, पृ0सं0– 66
12. वही, पृ0सं0– 65
13. वही, पृ0सं0– 128